बीमारी की राजनीति

वीणा शिवपुरी

हमारे देश को अनाज की जितनी ज़रूरत है उससे ज़्यादा अनाज यहां उपजाया जाता है। फिर भी लाखों लोगों को दो वक्त की रोटी भी नहीं मिल पाती। हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा मुफ्त है, फिर भी आधी जनता अनपढ़ है।

इसी तरह से हमारे देश में हर साल हज़ारों डाक्टर पढ़-लिख कर तैयार होते हैं। नये-नये स्वास्थ्य केंद्र भी खुलते हैं। फिर भी हर हज़ार बच्चों में से साठ बच्चे तो पांच बरस की उम्र से पहले ही मर जाते हैं।

ऐसा क्यों है?

अगर थोड़ा सोचें तो मालूम पड़ता है कि ग़रीबों में ज़्यादा कुपोषण है, ज़्यादा अशिक्षा है और ज़्यादा बीमारी है। यानि इन सब बातों का आपस में करीबी रिश्ता है।

सेहत के लिए ज़रूरी बातें

अच्छी सेहत के लिए दो तरह की कोशिशें ज़रूरी हैं। पहली तो यह कि बीमारी हो ही नहीं। दूसरी यह कि बीमार पड़ने पर सही समय पर सही इलाज मिले। बीमारी ना हो इसके लिए ज़रूरी है पोषक खुराक, सही समय पर रक्षक टीके और साफ़ सुथरा वातावरण। यानि घर के भीतर-बाहर सफ़ाई, अपने शरीर की सफाई, साफ़ पीने का पानी आदि। बीमार पड़ने पर हर तबके के इंसान की सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच होनी चाहिए। हम देखते हैं कि ग़रीबों के बीच आम तौर पर इन दोनों ही बातों का अभाव होता है।

गरीब मजदूर औरत और मर्द अपने कुटुंब को ताक़तवर खुराक नहीं दे पाते। उनके शरीर में बीमारी से लड़ने की ताक़त कम हो जाती है। इसलिए कोई भी बीमारी उन्हें आसानी से दबोच लेती है। बीमार पड़ने पर मज़दूरी का हर्जा कर के स्वास्थ्य केंद्र पर जाना भी मुश्किल होता है। एक-दो दिन भी मज़दूरी न मिलने का सीधा असर उनके भोजन पर होता है। इससे कमज़ोरी और बढ़ती है। यह एक ऐसा चक्र है जिससे निकलना मुश्किल होता है।

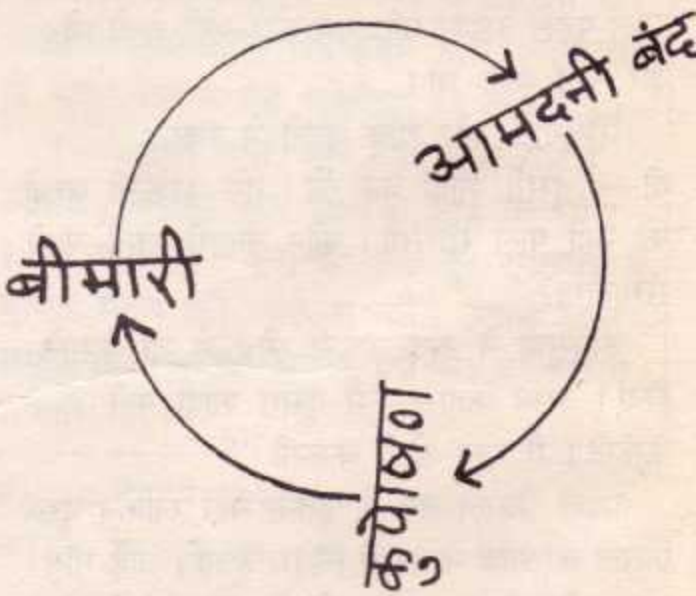

सबसे ज़रूरी बात—चेतना

इन सबसे एक बात तो समझ में आई कि सिर्फ़ स्वास्थ्य केंद्र खोल देने से लोगों की सेहत नहीं सुधरती। सबकी वहां तक पहुंच भी होनी चाहिए। उस पहुंच के लिए ज़रूरी है लोगों में चेतना। आज भी सफ़ेदपोश

कलम चलाने वाला मेहनतकश से ऊंचा समझा जाता है। ग़रीब लोग डाक्टरी सेवाओं को अपने ऊपर कृपा समझते हैं। वे उन्हें अपना हक़ समझ कर नहीं लेते।

केरल का उदाहरण

पूरे देश में केरल एक ऐसा प्रांत है जहां के आंकड़े आंखें खोल देने वाले हैं। वहां काफ़ी ग़रीबी है। उनकी फ़ी व्यक्ति औसत आमदनी देश की औसत आमदनी से काफी कम है। वहां के लोगों को देश की औसत खुराक़ से कम खुराक मिलती है। लेकिन वहां बाल मृत्यु दर देश की औसत दर से आधी से भी कम है। लड़कियों की शादी की औसत उम्र ऊंची है। साक्षरता अधिक है। यानि इन सब बातों में भी क़रीबी रिश्ता है।

बदलाव कैसे आया?

केरल में स्वास्थ्य और साक्षरता में बदलाव आने से पहले एक और बदलाव आया था। सन् 1930 के आसपास वहां खेतिहर किसानों और भूमिहीन मज़दूरों की दशा बहुत ख़राब थी। किसान और मज़दूरों ने संगठित होकर हालात बदलने के लिए जन आंदोलन चलाया। उन्होंने अपनी मज़बूत खेतिहर यूनियन बनाई। भूमि सुधार लागू किए गए। न्यूनतम मज़दूरी तय हुई। इस तरह से वहां जागरण और चेतना की लहर आई। केरल के लोगों के जीवन में बहुत बड़ा फ़र्क आया। उन्हें अपने हक़ों की जानकारी मिली। साथ ही संगठित ताकत के ज़रिए उन हक़ों को पाना सीखा। आज अगर वहां डाक्टर ठीक काम नहीं करते या ठीक दाम पर राशन नहीं मिलता तो वे चुप होकर नहीं बैठ जाते। सब लोग मिल कर हल्ला करते हैं। ऊपर के अफसरों से शिकायत करते हैं।

केरल प्रांत के उदाहरण से यह बात साबित हो जाती है कि अधिकारों के प्रति चेतना और सामूहिक शक्ति से बड़ी रुकावटें भी दूर की जा सकती हैं।

□